३. मान न मान; मैं तेरा मेहमान

– संजीव निगम

परिचय

जन्म : १९५९, नई दिल्ली
परिचय : संजीव निगम कविता, कहानी, व्यंग्य, नाटक आदि विधाओं में सक्रिय लेखन कर रहे हैं । आप प्रभावशाली वक्ता और कुशल मंच संचालक हैं । आपने धारावाहिकों तथा 'कॉर्पोरेट' फिल्म का लेखन भी किया है । आप कथाबिंब, अखिल भारतीय कहानी पुरस्कार, साहित्य गौरव सम्मान, साहित्य शिरोमणि सम्मान से पुरस्कृत हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'नहीं अब और नहीं', 'काव्यांचल', 'अँधेरों के खिलाफ', 'मुंबई के चर्चित कवि' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य लेख में संजीव निगम जी ने मान न मान; मैं तेरा मेहमान बनने, समय-असमय किसी के घर पहुँचकर मेहमान नवाजी करवाने वालों पर करारा व्यंग्य किया है । अनचाहे मेहमान के असमय घर पहुँचने पर, घरवालों की स्थिति तथा मेहमान की चतुराई का आपने मनोरंजक वर्णन किया है ।

मौलिक सृजन

'पर्यटन से मनुष्य बहुश्रुत बनता है,' इस पर अपने विचार लिखो ।

इतिहास गवाह है कि सिकंदर महान से लेकर मुझ तक, हर महान आदमी के शौक भी महान ही होते हैं । हम महान लोगों को दूध की बोतल पीने के दिनों से ही कुछ ऐसी आदत पड़ जाती है कि कोई भी काम सामान्य ढंग से कर ही नहीं सकते । आखिर पूरी दुनिया की निगाहें जो हमपर लगी होती हैं । कोई शौक भी पालते हैं तो ऐसा कि लोग कहें, ''शौक हो तो ऐसा, वरना न हो ।''

अब महान सिकंदर जैसों को तो खामख्वाह के लड़ाई-झगड़ों से ही फुरसत नहीं थी जो अपने शौकों को भली-भाँति पाल-पोस सकते । उसके उलटे मुझ बंदे के पास अपने शौक को हरा-हरा चारा खिलाकर पालने का टाइम-ही-टाइम है और इसलिए हमने अपने शौक का जी भरकर आनंद लिया है ।

अपना शौक है, मेहमान बनने का । जी हाँ, हमारी हिंदुस्तानी सभ्यता की एक बड़ी प्यारी अदा है 'मेहमान नवाजी' । हमारे यहाँ लोग मेहमान को अलौकिक भगवान का लौकिक रूप समझते हैं । इसलिए खुद चाहे महँगाई के इस दौर में बिना शक्कर की चाय पीएँ पर मेहमान को मधुमेह का मरीज करने की सीमा तक मीठा खिलाते हैं ।

देखा जाए तो हमारे देश में बड़ी फ्री स्टाइल टाइप की मेहमानदारी होती है । कोई बंधन नहीं, कोई रोक-टोक नहीं । आप रात १२ बजे भी जाकर अपने मेजबान का दरवाजा पुलिसिया बेशर्मी से ठोंक सकते हैं । बेचारा शराफत का मारा मेजबान सोते से उठकर भी हाथ जोड़कर आपका स्वागत करेगा । अगर आप किसी दूसरे शहर से आ रहे हैं तो अपना सामान आँखें मलते हुए मेजबान के हाथों में थमाकर बड़ी बेतकल्लुफी से उसके ही सोफे पर पसरते हुए कह सकते हैं, ''भाई सीधा स्टेशन से आ रहा हूँ । बड़े जोर की भूख लग रही थी पर बाहर का खाना खाकर कौन अपना पेट खराब करता । सोचा अपने ही तो घर जा रहे हैं, वहीं चलकर भाभी जी के हाथ का गरमागरम खाना खाएँगे ।'' और बेचारी भाभी जी नींद से झुकी पलकों के साथ आपके लिए पूरियाँ तलने में जुट जाएँगी । जब तक वे बेचारी अपनी नींद उड़ाकर आपके लिए खाना तैयार करें, तब तक आप मौके का फायदा उठाकर एक झपकी मार लें ।

वैसे विदेश की तुलना में भारतीय मेहमानदारी ज्यादा स्थायी प्रकार की होती है । जैसी आपकी श्रद्‌धा और सहूलियत हो उसके मुताबिक आप कुछ घंटों से लेकर कई महीनों तक मेहमान हो सकते हैं । अकेले खुद से लेकर पूरे परिवार समेत मेजबान के ड्राइंग रूम में कबड्‌डी खेल सकते हैं । प्रत्येक वर्ष जब मई, जून और अक्टूबर, नवंबर में विद्‌यालयों की छुट्‌टियाँ होती हैं तो ऐसे सुखद दृश्य घर-घर में देखे जा सकते हैं ।

कई बार तो ऐसा भी होता है कि आप किसी के घर पहुँचे तो देखा कि वे आपको देखते ही अचकचाकर कहेंगे, ''अरे आप लोग ? इस वक्त यहाँ ... कैसे ?'' आप बड़ी गरमजोशी से उनके ठंडे पड़ते हाथ को थामकर कहेंगे, ''भाई, मुन्नी को आपकी बड़ी याद आ रही थी, कहने लगी अबकी छुट्‌टियाँ चच्चा के यहाँ बिताएँगे ... तो बस आना ही पड़ गया, आप लोग कहीं बाहर जा रहे थे क्या ?'' सभ्यता के मारे आपके मेजबान अपनी और बच्चों की लाल-लाल आँखों से बचते हुए, होंठों पर हँसी का हल्का-सा चतुर्भुज बनाते हुए कहेंगे, ''नहीं-नहीं, बाहर नहीं जा रहे थे ।'' और इसके बाद वे अपने दिल का दर्द अपने दिल में समेटे हुए अपने सामान के साथ-साथ आपका सामान खोलने में भी मदद करेंगे ।

चूँकि हीरे की कदर सिर्फ जौहरी ही जानता है इसलिए हमारी संस्कृति के इस कोहिनूर हीरे को हमारी पारखी नजर ने बहुत साल पहले ही ताड़ लिया था और तभी से हमने ये भीष्म प्रतिज्ञा कर ली थी कि साल के ३६५ दिनों में से ज्यादा-से-ज्यादा दिन अपने रिश्तेदारों, दोस्तों व जानकारों के मेहमान बनकर उन्हें कृतार्थ करते रहेंगे ।

हममें एक बात अच्छी है कि हमारे माता-पिता दोनों की तरफ का कुनबा काफी लंबा-चौड़ा है । शादी के बाद उसमें पत्नी के कुनबे का भी समावेश हो गया । इसके अलावा कई चलते-फिरते जानकार भी हैं । आपकी दुआ से बंदे ने उन्हें भी अपनी मेहमानदारी से नवाज रखा है । अपना तो उसूल इतना सीधा है कि कभी कोई सड़क चलता हुआ हमारी ओर देख भर लेता है तो तुरंत उससे पूछ बैठते हैं, ''और भई, घर कब बुला रहे हो ?'' इसी बेतकल्लुफी के चलते कई बार हम बिना जान-पहचान के लोगों की डाइनिंग टेबल की शोभा बढ़ा चुके हैं। हमारे उनके घर से खा-पीकर, फिर आने का वादा करके निकलने के बाद अकसर वह मियाँ-बीवी इस बात को लेकर आपस में लड़-मरते हैं कि आखिर हम उन दोनों में से रिश्तेदार किसके थे ।

संभाषणीय

अपनी व्यस्त जिंदगी में अचानक बिना बताए आए हुए मेहमान और गृहस्वामी के बीच का औपचारिक संवाद प्रस्तुत करो ।

लेखनीय

किसी के घर जाने पर प्राप्त आतिथ्य के बारे में अपने अनुभव लिखो ।

पठनीय

देवेंद्रनाथ शर्मा लिखित 'अतिथि देवो भव' हास्य-व्यंग्य निबंध पढ़ो ।

वैसे सच पूछा जाए तो मेहमान बनना एक ऐसी कला है जिसका विकास अभी पूरी तरह से नहीं हो पाया है । अब यही देखिए जब कभी किसी उच्च कोटि के मेहमान का उदाहरण देना होता है तो मुझे अपना ही नाम लेना पड़ता है । आज के इस कठिन आर्थिक युग में यह काम भी कठिन होता जा रहा है । कितने दाँव-पेंच लड़ाने पड़ते हैं मेहमान बनने के लिए ।

जैसे कभी किसी ऐसे दोस्त के घर जाना पड़ जाए जहाँ खाना मिलने की उम्मीद ना हो तो सीधे घर की मालकिन पर ब्रह्मास्त्र चलाना पड़ता है । यानि कि स्थिति कुछ यूँ होती है कि 'हम दोस्त के घर पहुँचे । उसने तुरंत मातमी सूरत बनाकर पूछा,' फिर कैसे आना हुआ ? जवाब में हमने तुरंत दूसरे कमरे में बैठी मन-ही-मन हमें कोसती हुई उनकी श्रीमती जी को लक्ष्य करके कहा, ''बस क्या बताएँ यार ! उस दिन भाभी जी के हाथ का लाजवाब खाना क्या खाया कि अब किसी और के खाने में स्वाद ही नहीं आता है । ससुरे फाइव स्टार होटल के शेफ भी भाभी जी के हाथ के जादू के आगे पानी भरते हैं ।'' बस हो गया किला फतह । अब हमारा प्यारा दोस्त भले ही हमें घर से धक्के देकर निकालना चाहता हो पर प्यारी भाभी जी अपने इस कद्रदान देवर को भूखा थोड़े ही जाने देंगी ।

शादी होने के बाद से हमने बच्चों के विद्‌यालय की छुट्‌टियों के दिनों वाली थोड़े स्थायी प्रकार की मेहमानदारी विधा के विकास की ओर भी काफी ध्यान दिया है । ऐसी मेहमानदारी की फसल उगाने के लिए ससुराल की धरती काफी उपजाऊ रहती है । ससुराल पर धावा बोलते समय बच्चों का बड़ा सहारा रहता है । जितने ज्यादा बच्चे होंगे, उतनी ही ज्यादा बार हमला करने की सुविधा रहेगी ।

एक साल टुन्नू को अपने नाना की याद आएगी, तो दूसरे साल टिन्नी को । तीसरे साल मुन्नी को और ये क्रम इसी प्रकार चलता रहेगा । पिछली बार तो ऊपरी बच्चों का नंबर खतम होने पर मुझे अपने छह महीने के बच्चे का सहारा लेकर कहना पड़ा, ''इस बार मेरी बुआ जी बुला रही थीं पर क्या बताऊँ इस छुटके को अपने नाना-नानी की इतनी याद आ रही थी कि मजबूरन यहाँ आना पड़ गया ।'' एक शातिर को बेटी देकर फँस गए ससुराल वालों के सामने इस कुतर्क को भी मानने के सिवाय चारा ही क्या था ।

ससुराल संबंधी दूसरी रिश्तेदारियों में हमारे कुशल निर्देशन में श्रीमती जी भी जबरदस्त भूमिका निभाती हैं । अपने शिकार के घर

पहुँचते ही अपनी चाची, मौसी या मामी से लिपट जाएँगी और बड़े भावुक स्वर में कहेंगी, ''जबसे मुई शादी हुई है, आपसे सही ढंग से मिलने तक को तरस गई हूँ । इसलिए इस बार इनसे लड़-झगड़कर सबको लेकर इधर आई हूँ ताकि जी भरकर आपके साथ रह सकूँ ।'' और वे बेचारियाँ जब तक अपनी इस भतीजी या भांजी के प्रेम प्रदर्शन के इस अप्रत्याशित हमले से बाहर आती हैं तब तक हम अपने सूटकेसों को उनके घर में जमाकर अपनी दीर्घकालिक उपस्थिति के स्पष्ट संकेत उन्हें दे देते हैं ।

अपनी मेहमानदारी विशेषज्ञता से हमने अपने नाते-रिश्तेदारों को इतना लाभान्वित किया है कि उनमें से कई के बच्चे बड़े-बड़े कॉर्पोरेट हाउसेस में गेस्ट रिलेशन ऑफिसर बन गए हैं और कुछ लोगों ने बिना कोई कैटरिंग डिप्लोमा पास किए अपने खुद के रेस्टोरेंट खोल लिए हैं।

अपना तो छोटा-सा देशभक्तिपूर्ण प्रयास यही है कि एक दिन गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स में यह छपे कि दुनिया में सबसे अधिक मेहमान बनने का रेकार्ड भारत के इस लाड़ले सपूत ने स्थापित किया है ।

अगर मेरे संबंधी, दोस्त और जानकार थोड़ा-सा धैर्य रखें तो यह काम कोई मुश्किल भी नहीं है । उनका हौसला बढ़ाने के लिए मैं अक्सर उन्हें ये शेर सुनाता रहता हूँ-

शुक्र कर उस खुदा का, और मुझ मेहमान का,
तेरा खाना खा रहा हूँ, तेरे दस्तरखान पर ।

—— ० ——

श्रवणीय

किसी समारोह में गाया जाने वाला कोई स्वागत गीत सुनो और अपने अभिभावकों को सुनाओ ।

शब्द वाटिका

खामख्वाह = बेकार में, बिना वजह

मेजबान = मेहमानदारी, आतिथ्य करने वाला

बेतकल्लुफी = बेधड़क, निस्संकोच, बिना किसी तकल्लुफ के

शातिर = परम धूर्त, चालाक

कुतर्क = बुरा तर्क, बेढंगी दलील

दस्तरखान = भोजन की थाली के नीचे रखा जाने वाला कपड़ा

✲ **सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

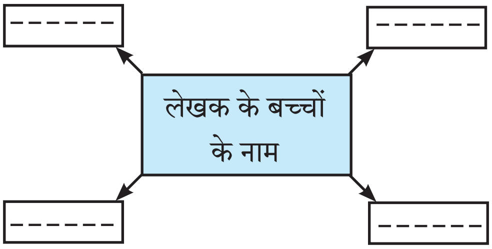

(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण करो :–

१. शादी के बाद उसमें पत्नी के कुनबे/कनुबे/कुनुबे का समावेश हो गया ।

२. शोक/शौक/शैक हो तो ऐसा, वरना न हो ।

(३) टिप्पणी लिखो :

१. छुट्‌टियों में घर-घर दिखाई देने वाला दृश्य-

२. भारतीय मेहमानदारी -

MH25KF

सदैव ध्यान में रखो

अतिथि बनकर जाने से पहले यजमान की सुविधा देखनी चाहिए ।

भाषा बिंदु

चौखट में निर्देशित कालानुसार क्रियारूप में परिवर्तन करके लिखो :

क्रिया	सामान्य वर्तमान काल	अपूर्ण वर्तमान काल	पूर्ण वर्तमान काल	सामान्य भूतकाल	अपूर्ण भूतकाल	पूर्ण भूतकाल	सामान्य भविष्यकाल	अपूर्ण भविष्यकाल	पूर्ण भविष्यकाल
लिखना	लिखती है/ लिखता हूँ	लिख रहा है	लिखा है	लिखा	लिख रहा था/ लिखता था	लिखा था	लिखेगा	लिख रहा होगा	लिखा होगा
करना	–	–	किया है	किया	–	–	–	–	किया होगा
माँगना	माँगता है	–	माँगा है	–	माँग रहा था/ माँगता था	–	–	–	माँगा होगा
देना	–	दे रहा है	–	दिया		दिया था	–	–	–
उठना	उठता है	उठ रहा है	–	–	–	–	–	उठा रहा होगा	–

उपयोजित लेखन

'सबसे सुंदर अपना देश' विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

छुट्‌टियों के दिनों में अपने पर्यटन का नियोजन तैयार करो ।